खुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है
जस्टिस मोलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान कासमी

प्रकाशक

फरीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — खुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है

ख़िताब — मौलाना मुहम्मद तकी उस्मानी

हिन्दी अनुवाद — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 2100

प्रकाशन वर्ष — मई 2004

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

विषय सूची

ख़ुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ○ اَمَّا بَعْدُ!

عن عطاء بن يسار رحمه الله تعالىٰ قال: لقيت عبد الله بن عمرو بن العاص رضى الله عنه، فقلت اخبرني عن صفة رسول الله صلى الله عليه وسلم في التوراة. قال أجل والله إنه لموصوف في التوراة ببعض صفته في القران يا ايها النبي انا ارسلنك شاهدًا ومبشرًا و نذيرًا و حرزًا للأميين أنت عبدى ورسولي سميتك المتوكل ليس بفظ ولا غليظ ولا سخّاب في الأسواق ولا يدفع السيئة بالسيئة ولكن يعفو و يصفح ولن يقبض الله تعالىٰ حتى يقيم به الملة العوجاء بان يقولوا لا اله الاالله فيفتح بها اعينًا عميا وآذانًا صمًا و قلوبًا غلفًا. (بخارى، كتاب التفسير)

खिले हुए चेहरे से पेश आना ख़ुदा की मख़्लूक़ का हक़ है

यह एक लम्बी हदीस है और इस पर इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "बाबुल इम्बिसात इलन्नास" का उनवान क़ायम फ़रमाया है। यानी लोगों के साथ ख़ुश-मिज़ाजी और खिले हुए चेहरे से पेश आना और लोगों में घुले-मिले रहना।

यह किताब इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "अल्-अदबुल् मुफ़रद" के नाम से लिखी है और इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे हदीसें जमा की हैं जो ज़िन्दगी के विभिन्न शोबों (क्षेत्रों) में इस्लामी आदाब के बारे में हैं। और उन आदाब की आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी करनी और कथनी से तालीम फ़रमाई है। उनमें से एक अदब और एक सुन्नत यह है कि मख़्लूक़ के साथ घुले-मिले रहो और उनके साथ खिले चेहरे से पेश आओ।

और यह अल्लाह की मख़्लूक़ का हक़ है कि जब अल्लाह के किसी बन्दे से मुलाक़ात हो तो उससे आदमी ख़न्दा-पेशानी (हंसते चेहरे) से मिले। अपने आपको तकल्लुफ़ वाला और सख़्त-मिज़ाज न बनाए कि लोग क़रीब आते हुए डरें, चाहे अल्लाह तआ़ला ने दीन का या दुनिया का बड़े से बड़ा मुक़ाम या ओ़हदा अ़ता फ़रमाया हो। वह उस मुक़ाम की वजह से अपने आपको लोगों से कटकर सख़्त-मिज़ाज बनकर न बैठे, बल्कि घुला-मिला रहे। यह अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नत है।

नबी करीम की इस सुन्नत पर काफ़िरों का एतिराज़

बल्कि यह वह सुन्नत है जिस पर कुछ काफ़िरों ने एतिराज़ किया था। कुरआन पाक में आता है किः

तर्जुमाः और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना भी खाता है और बाज़ारों में भी फिरता है।

(सूरः फुरक़ान आयत 6)

काफ़िर लोग समझते थे कि बाज़ारों में फिरना पैग़म्बरी के ओहदे और मुक़ाम के ख़िलाफ़ है। यह इस वजह से समझते थे कि उन्होंने अपने बादशाहों और सरदारों को देखा था कि जब वे बादशाहत के पद पर पदासीन हो जाते थे तो जनता से कटकर बैठ जाते थे। आम आदमी की तरह बाज़ारों में नहीं आते थे बल्कि ख़ास शाहाना ठाट-बाट से आते थे। तो वे यह समझते थे कि पैग़म्बरी तो इतना बड़ा और ऊँचा मुक़ाम है कि बादशाहत तो उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

लेकिन कुरआन करीम ने उनके इस बातिल और ग़लत ख़्याल की तरदीद की इसलिए कि पैग़म्बर तो आते ही तुम्हारे सुधार के लिए हैं। इसलिए दुनिया का भी हर काम आम इनसानों में घुल-मिलकर के दिखाते हैं और उसके आदाब और उसकी शर्तें बताते हैं, न यह कि अपने आप को अवाम से काटकर एक तरफ़ बैठ जाते हैं। इसलिए पैग़म्बरों का बाज़ारों में चलना-फिरना और मिलनसार होना कोई ऐब की बात नहीं।

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुक़्तदा (मुक़्तदा का मतलब होता है जिसको

देखकर लोग पैरवी करते हों) बनने के बाद लोगों से कटकर बैठ गया और अपनी शान बना ली तो उसको इस रास्ते (यानी दीनी काम) की हवा भी नहीं लगी।

फ़रमाया कि एक आम आदमी की तरह रहो, जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रहा करते थे।

मिलनसारी का निराला अन्दाज़

शमाइले तिर्मिज़ी में रिवायत है किः

तर्जुमाः हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक बार मदीना मुनव्वरा के बाज़ार मुनाक़ा (मुनाक़ा बाज़ार मदीना मुनव्वरा का एक बाज़ार था जो अब हरम शरीफ़ विस्तार वाले हिस्से में शामिल हो गया है। मैंने भी किसी ज़माने में उसके दर्शन किए थे) में तशरीफ़ ले गये। वहाँ एक देहाती थे हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु। देहात से सामान लाकर शहर में बेचा करते थे। स्याह रंग था और ग़रीब आदमी थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनसे बहुत मुहब्बत फ़रमाया करते थे।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चुपके से उनके पीछे गये और उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया और उनको पीछे से कमर से पकड़ लिया, फिर आवाज़ लगाई कि "कौन है जो मुझसे यह ग़ुलाम ख़रीदेगा?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मज़ाक़ किया। जब हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आवाज़ पहचान ली तो उनकी ख़ुशी की इन्तिहा न रही। वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी पीठ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पाक जिस्म के साथ और मिलाने की कोशिश की और मैंने कहा

या रसूलल्लाह! अगर आप इस गुलाम को बेचेंगे तो बहुत कम पैसे मिलेंगे इसलिए कि काले रंग का है और मामूली दर्जे का आदमी है। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं ऐ ज़ाहिद! अल्लाह के यहाँ तुम्हारी क़ीमत बहुत ज़्यादा है।

इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाएँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ार में तशरीफ़ लेजा रहे हैं और किस तरह एक मामूली दर्जे के आदमी के साथ मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं। देखने वाला यह अन्दाज़ा लगा सकता है कि यह कितने ऊँचे दर्जे के पैग़म्बर हैं कि जिनके सामने जिब्राईल अमीन के भी पर जलते हैं। आप पर लाखों सलाम हों।

पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती हैं या आ़म राहगीर

मेरे शैख़ हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब अल्लाह तआ़ला उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, आमीन। फ़रमाते हैं कि एक बार मैं अपने क्लीनिक में बैठा हुआ था (हज़रत का क्लीनिक उस वक़्त ब्रन्स रोड पर होता था और हमारा घर भी उस ज़माने में उसके क़रीब ही हुआ करता था) देखा कि क्लीनिक के सामने फुटपाथ पर मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि हाथ में पतीली लिए हुए एक आ़म आदमी की तरह जा रहे हैं। फ़रमाते हैं कि मैं यह देखकर हैरान रह गया कि पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती, पूरी दुनिया में जिसके इल्म और परहेज़गारी के गुण गाये जाते हैं, वह इस तरह एक आ़म आदमी की तरह हाथ में पतीली लेकर फिर रहा है। मैंने अपने साथियों

से कहा कि क्या इनको देखकर कोई पहचान सकता है कि यह मुफ़्ती-ए- आज़म पाकिस्तान (यानी पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती) हैं?

फिर हज़रत डॉक्टर साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला अपने साथ ख़ास ताल्लुक़ अ़ता फ़रमा देते हैं वह अपने आपको आ़म मुसलमानों के साथ इस तरह घुला-मिलाकर रखता है कि किसी को मालूम भी नहीं होता कि यह किस मुक़ाम के आदमी हैं।

और यही सुन्नत है जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। न यह कि आदमी अपनी शान बनाकर रखे और लोगों के साथ मामलात करने में तकल्लुफ़ से काम ले।

मस्जिदे नबवी से मस्जिदे कुबा की तरफ़ आ़मियाना चाल

एक बार जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी से पैदल चलकर ऐसे ही दोस्ताना मुलाक़ात के लिए हज़रत अ़तबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास तशरीफ़ ले गये जो मस्जिदे कुबा के क़रीब रहते थे। तक़रीबन तीन मील का फ़ासला है। उनके घर के दरवाज़े पर जाकर तीन दफ़ा आवाज़ दी, शायद वह सहाबी किसी ऐसी हालत में थे कि जवाब नहीं दे सकते थे, तो क़ुरआन पाक के हुक्म के अनुसारः

तर्जुमाः जब तुम से कहा जाए कि वापस चले जाओ तो वापस हो जाओ। (सूरः नूर आयत 28)

चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वापस मस्जिदे

नबवी तशरीफ़ ले आए। कोई नागवारी का इज़हार नहीं फ़रमाया। दोस्त से मिलने गये थे, अपनी तरफ़ से दोस्ती का हक़ अदा किया, नहीं हुई मुलाक़ात, वापस तशरीफ़ ले आए।

बाद में हज़रत अ़तबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मालूम हुआ तो वह दौड़ते हुए आए और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मिले और फ़िदा होने लगे कि मेरी क्या हैसियत कि आप मेरे दर पर तशरीफ़ लाए।

शायद यह ज़्यादा मुश्किल सुन्नत हो

वैसे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सारी सुन्नतें ऐसी हैं कि हर सुन्नत पर इनसान क़ुरबान हो जाए लेकिन एक सुन्नत तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में आई है। मैं समझता हूँ कि शायद इस पर अ़मल करना ज़्यादा मुश्किल काम है। लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल था।

रिवायत में आता है कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कोई बात करता तो आप उस समय तक उससे चेहरा नहीं फेरते थे जब तक कि वह खुद ही न चेहरा फेर ले। अपनी तरफ़ से बात काटते नहीं थे।

कहने को आसान बात है। इसका अन्दाज़ा उस समय होता है जब सैकड़ों आदमी रुजू करते हों। कोई मसला पूछ रहा है। कोई अपनी मुश्किल बयान कर रहा है, तो आदमी का दिल चाहता है कि मैं जल्दी- जल्दी उससे निमट जाऊँ।

और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब वे बोलने पर आ जाएँ तो रुकने का नाम ही नहीं लेते, उनके साथ यह मामला करना

कि जब तक वे न रुक जाएँ उस समय तक उनसे न हटें, यह बहुत ज़्यादा मुश्किल काम है।

लेकिन जनाब नबी करीम सल्ल० जो जिहाद में मशगूल हैं, तब्लीग में व्यस्त हैं, तालीम में भी व्यस्त हैं। जो पूरी दुनिया की इस्लाह के लिए भेजे गये हैं। एक बुढ़िया भी रास्ते में पकड़ कर खड़ी हो जाती है तो उस समय तक उससे नहीं फिरते जब तक कि पूरी तरह उसको सन्तुष्ट नहीं कर देते।

मख़्लूक़ से मुहब्बत करना हकीकत में अल्लाह से मुहब्बत करना है

यह सिफ़त इनसान के अन्दर उस समय पैदा हो सकती है कि जब मख़्लूक़ के साथ इस वजह से मुहब्बत हो कि यह मेरे अल्लाह की मख़्लूक़ है।

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि अगर तुम्हें अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत है तो तुम अल्लाह तआ़ला से क्या मुहब्बत करोगे। अल्लाह तआ़ला की ज़ात को न देखा, न समझा, न उसको तुम तसव्वुर में ला सकते हो।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि अगर मुझसे मुहब्बत है तो मेरी मख़्लूक़ से मुहब्बत करो और मेरी मख़्लूक़ के साथ अच्छा सुलूक करो, तो अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का एक अ़क्स तुम्हारी ज़िन्दगी में आएगा। यह कोई मामूली बात नहीं है। इसी लिए इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि यह बाब क़ायम कर रहे हैं "बाबुल् इम्बिसाति इलन्नास" कि लोगों के साथ हंसते-खिलते

चेहरे के साथ पेश आना, और उनके साथ घुला-मिला रहना। और इस तरह रहना जैसे एक आम आदमी होता है। यानी अपना कोई इम्तियाज़ और शान पैदा न करना। यह मक़सूद है इस बाब का। इसमें हदीस नक़ल की है हज़रत अ़ता बिन यसार ताबिई रहमतुल्लाहि अ़लैहि की। वह कहते हैं कि मेरी मुलाक़ात हुई हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स की नुमायाँ ख़ुसूसियात

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मशहूर सहाबी हैं और उन सहाबा किराम में से हैं जो अपनी इबादत की कसरत (अधिकता) में मशहूर थे। बहुत आ़बिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हदीसें भी काफ़ी तायदाद में नक़ल की हैं।

एक ख़ुसूसियत उनकी यह है कि उन्होंने तौरात, ज़बूर, इन्जील का इल्म भी किसी ज़रिये से हासिल किया हुआ था। हालाँकि ये किताबें ऐसी हैं कि यहूदियों और ईसाइयों ने उनमें बहुत कुछ तहरीफ़ें (कमी-बेशी और तब्दीलियाँ) कर दी हैं और अपनी असली हालत में बरक़रार नहीं हैं, लेकिन इसके बावजूद उनको इस नज़रिये (दृटिकोण) से पढ़ना ताकि उनकी सच्चाई मालूम हो और यहूदियों और ईसाइयों को तब्लीग़ करने में मदद मिले, तो पढ़ने की इजाज़त है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कुछ तौरात यहूदियों से पढ़ी हुई थी।

तौरात में अब भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है

तौरात अगरचे मुकम्मल तौर पर पहले की तरह नहीं है। यहूदियों ने उसमें बहुत ज़्यादा बदलाव कर दिया है। बहुत-से हिस्से ख़त्म कर दिये हैं नये इज़ाफ़े कर दिये, अलफ़ाज़ को बदल दिया, लेकिन इसके बावजूद कहीं-कहीं फिर भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है।

इसी वजह से उसमें अब भी जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने की खुशख़बरी और आपकी सिफ़ात मौजूद हैं। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में तो और ज़्यादा स्पष्ट थीं। इसी वजह से कुरआन करीम कहता है कि:

"ये यहूदी आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को इस तरह जानते हैं जिस तरह अपने बेटों को जानते हैं"।

(सूरः ब-क़रह् आयत 146)

इसलिए कि तौरात में जो निशानियाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बयान हुई थीं कि नबी आख़िरुज़्ज़माँ ऐसी-ऐसी सिफ़ात रखने वाले होंगे। ऐसा उनका हुलिया होगा। इस ख़ानदान के होंगे। इस शहर में होंगे। यह सारी तफ़सील ज़िक्र की गयी थी। जो यहूदी उन किताबों के आ़लिम थे वे अपनी आँखों से वे निशानियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में देखते थे, कि पाई जा रही हैं मगर अपनी ज़िद और हठधर्मी और दुश्मनी की वजह से मानते नहीं थे। तो हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब मेरी मुलाक़ात हज़रत

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई तो मैंने उनसे कहा कि आपने तो तौरात पढ़ी है, तौरात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें बयान की गयी हैं, वे हमें बतलाएँ।

बाईबल से कुरआन तक

ये किताबें उन लोगों ने इतनी बिगाड़ दी हैं इसके बावजूद उसमें कुछ टुकड़े ऐसे हैं कि ऐसा महसूस होता है कि जैसे कुरआन करीम का तर्जुमा है। उनकी मशहूर किताब बाईबल जिसको "किताबे मुक़द्दस" भी कहते हैं उसको यहूदी भी मानते हैं और ईसाई भी मानते हैं। उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की खुशख़बरियाँ आज भी मौजूद हैं। मुझे तौरात का एक जुमला याद आ गया जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की खुशख़बरी देते हुए फ़रमाया गया कि:

"जो फ़ारान से तुलू होगा। सलाह में बसने वाले गीत गाएँगे, क़ैदार की बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी"

"फ़ारान" नाम है उस पहाड़ का जिस पर ग़ारे-हिरा स्थित है। "सलाह" नाम है उस पहाड़ का जिसका एक हिस्सा "सनियतुल्-विदा" है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उसपर बच्चियों ने खड़े होकर ये तराने पढ़े थे:

"त-लअ़ल् बद्रु अ़लैना मिन् सनियातिल् विदाअ़ि"

यानी हम पर चाँद तुलू हुआ (निकला) सनियातिल् विदा की तरफ़ से। मुराद नबी पाक का उधर से नज़र आना है।

और क़ैदार नाम है हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम के बेटे का। और उनकी बस्तियाँ अ़रब में आबाद हैं। उनकी तरफ़ इशारा है कि जब उनकी औलाद में आख़िरी नबी पैदा होंगे तो बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी।

आपकी सिफ़तें तौरात में भी मौजूद हैं

बहरहाल! हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन अ़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हाँ! मैं बताता हूँ।

अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कुछ सिफ़तें तौरात में ऐसी बयान की गयी हैं जो कुरआन पाक में भी ज़िक्र हुई हैं।

फिर उन्होंने कुरआन पाक की यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः ऐ नबी! हमने आपको गवाह बनाकर और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा। (सूरः अहज़ाब आयत 45)

गवाह बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाही देंगे कि इस उम्मत को अल्लाह तआ़ला की तौहीद का पैग़ाम दिया गया था तो किसने उस पर अ़मल किया और किसने नहीं। इस बात की गवाही देंगे। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लोगों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाले होंगे और जहन्नम से डराने वाले होंगे।

यह आयत कुरआन करीम की तिलावत फ़रमाई फिर आगे तौरात की इबारत पढ़कर सुनायी किः

"व हिर्ज़न् लिल्-उम्मिय्यीन"

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अनपढ़ लोगों के वास्ते नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। "उम्मी" का लफ़्ज़ ख़ास तौर से लक़ब के तौर पर अ़रबों के लिए बोला जाता था। इसलिए कि उनके यहाँ लिखने-पढ़ने का रिवाज नहीं था, कि उम्मियों के लिए नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। आगे फ़रमायाः

"व अन्-त अ़ब्दी व रसूली"

यानी अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तौरात में फ़रमा रहे हैं कि ऐ नबी मुहम्मद! तुम मेरे बन्दे हो और पैग़म्बर हो।

"व सम्मैतुकल् मुतवक्कि-ल"

और मैंने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा है, यानी अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करने वाला।

आगे सिफ़तें बयान फ़रमाईं कि वह नबी कैसा होगा? फ़रमायाः

"लै-स बिफ़ज़्ज़िन् व ला ग़ैलीज़िन्"

वह न तो सख़्त और कड़वी बात करने वाला होगा और न सख़्त तबीयत वाला होगा। "फ़ज़्ज़" के मायने हैं जिसकी बातों में सख़्ती हो, लहजा उखड़ा हुआ हो।

"व ला सख़्ख़ाबु फ़िल्-अस्वाकि"

और न बाज़ारों में शोर मचाने वाला होगा।

"व ला यद्फ़उस्सय्यि-अ-त बिस्सय्यि-अति"

और वह बुराई का बदला बुराई से नहीं देगा।

"व लाकिन् यअ़फ़ू व यस्फ़हु"

लेकिन वह माफ़ करने वाला और दरगुज़र करने वाला होगा।

"व लंय्-यक़्बि-ज़हुल्लाहु तआला हत्ता युक़ी-म बिहिल् मिल्लतल् इ-वजा-अ बिअंय्-यक़ूलू ला इला-ह इल्लल्लाहु"

और अल्लाह तआला उस वक़्त तक उसको अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दें, इस तरह कि वे कह दें "ला इला-ह इल्लल्लाहु"।

"व यफ़्तहु बिहा अअ्युनन् उम्यन् व आज़ानन् सुम्मन् व कुलूबन् गुल्फ़न्"

और इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखें खोल देगा, और बहरे कान खोल देगा। और वे दिल जिनके ऊपर पर्दे पड़े हुए हैं, वे उनके ज़रिये खुल जाएँगे।

और ये सिफ़तें तक़रीबन इन्हीं अलफ़ाज़ के साथ तौरात में आज भी मौजूद हैं।

तौरात की इब्रानी भाषा में आप सल्ल० की सिफ़तें

चूँकि मुहावरे हर ज़बान (भाषा) में अलग-अलग होते हैं तो असल तौरात इब्रानी ज़बान में थी। उसका तर्जुमा जब उर्दू में करते हैं तो इस तरह करते हैं कि:

"वह मसले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा। टिमटिमाती हुई बत्ती को न बुझाएगा"।

और इब्रानी ज़बान के मुहावरे में तर्जुमा इस तरह करते हैं कि:

"वह किसी बुराई का बदला बुराई से न देगा और माफ़ करने व दरगुज़र करने से काम लेगा। और उसके आगे पत्थर के बुत औंधे मुँह गिरेंगे"।

और यह वाक़िआ उस वक़्त पेश आया जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा को फ़तह किया तो पत्थर के बुत जो काबा शरीफ़ में स्थापित थे, वे औंधे मुँह गिरे। यह सारी तफ़सील आई है। मैंने जो "इज़हारुल् हक़" का तर्जुमा "बाईबल से कुरआन तक" के नाम से किया है, उसकी तीसरी जिल्द का छठा बाब इन्हीं ख़ुशख़बरियों पर आधारित है। मैंने दो कालम बनाकर एक कालम में बाईबल की इबारत और दूसरे कालम में वे हदीसें लिखी हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें आई हैं। फिर उनकी तुलना करके दिखाई कि बाईबल में यह आया है और कुरआन करीम में या हदीस में यह आया है। तो इतनी कमी-बेशी और बदलाव के बावजूद आज भी ये सिफ़तें बाईबल में बाक़ी हैं।

ज़िक्र हुई हदीस से इमाम बुख़ारी रह० का मकसद

लेकिन जिस ग़रज़ से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि यह हदीस लेकर आए हैं वह यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जो हालात पिछली किताबों में बयान हुए वे क्या थे, और इस पेशीनगोई में जो आप सल्ल० की इम्तियाज़ी सिफ़तें हैं और सबसे ज़्यादा अहमियत वाली हैं, वे क्या हैं?

वे ये हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सख़्त नहीं हैं और कड़वे मिज़ाज वाले नहीं हैं। और बुराई का बदला बुराई से नहीं देते।

यह सुन्नत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने शरीअ़त में इजाज़त दी है कि अगर

किसी आदमी ने तुम्हारे साथ बुराई की है तो जितनी बुराई की है उतना बदला ले सकते हो। एक तमाँचा मारा है तो तुम भी उतने ही ज़ोर से एक तमाँचा मार सकते हो जितना ज़ोर से उसने मारा। उससे कम या ज़्यादा न हो। इसकी इजाज़त है। लेकिन इजाज़त होना और बात है और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत होना और बात है। आपने सारी उम्र कभी किसी आदमी से अपनी ज़ात का बदला नहीं लिया।

बुराई का जवाब अच्छे सुलूक से देना

यह भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बड़ी महत्त्वपूर्ण सुन्नत है। हमने सुन्नतों को कुछ ज़ाहिरी सुन्नतों तक सीमित कर लिया है। जैसे सुन्नत है कि मिस्वाक करनी चाहिये, दाढ़ी रखनी चाहिये और अपना ज़ाहिरी हुलिया सुन्नत के अनुसार रखना चाहिये। ये सब सुन्नतें हैं इनकी अहमियत से भी जो इनकार करे वह सुन्नतों को नहीं जानता। लेकिन सुन्नतें इस हद तक सीमित नहीं, आ़म सम्बन्धों और मामलात में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जो तरीक़ा-ए-अ़मल था, वह भी आपकी सुन्नत का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। और जिस पाबन्दी के साथ दूसरी सुन्नतों पर अ़मल करने का दिल में दाईया (जज़्बा और तक़ाज़ा) पैदा होता है उससे भी ज़्यादा एहतिमाम के साथ इस सुन्नत पर अ़मल करने की फ़िक्र करनी चाहिये कि बुराई का बदला बुराई से न दें बल्कि बुराई का बदला अच्छाई के साथ दें। सुन्नत के मुताबिक़ अच्छाई से दें।

अब ज़रा हम अपने गिरेबानों में झाँक कर देखें कि हम इस

सुन्नत पर कितना अमल कर रहे हैं? हमारे साथ अगर किसी ने बुराई की है तो बदले की भावना कितनी दिल में पैदा होती है और कितनी उसको तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश करते हैं? अगर ग़ौर करें तो समाज में फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) का बहुत बड़ा सबब यह है कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस सुन्नत को छोड़ दिया है। हमारी सोच यह होती है कि उसने चूँकि मेरे साथ बुराई की है, मैं भी उससे बुराई करूँगा। उसने मुझे गाली दी है, मैं भी गाली दूँगा। उसने मुझे मेरी शादी पर क्या तोहफ़ा दिया था, मैं भी उतना ही दूँगा। और उसने शादी पर तोहफ़ा नहीं दिया था तो मैं भी नहीं दूँगा।

इसका मतलब यह हुआ कि यह सब कुछ बदला करने के लिए हो रहा है। बदला करने वाला दर असल सिला-रहमी करने वाला नहीं होता। हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया है:

तर्जुमाः यानी हक़ीक़त में सिला-रहमी करने वाला वह शख़्स है कि दूसरा तो क़ता-रहमी कर रहा है और रिश्तेदारी के हुक़ूक़ अदा नहीं कर रहा है और यह जवाब में क़ता-रहमी करने के बजाए उसके साथ अच्छा मामला कर रहा है। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब का अ़जीब वाक़िआ़

एक दिन हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपने घर पर कुछ लोगों और ख़ादिमों के साथ बैठे हुए थे। अचानक एक साहिब आए जो हज़रत के कोई रिश्तेदार थे। दाढ़ी-मूँछ साफ़, आ़म आदमियों की तरह थे। दरवाज़े में दाख़िल

होते ही गालियाँ देनी शुरू कर दीं। बहुत ही बे-अदबी के लहजे में जितने अलफ़ाज़ बुराई के उनके मुँह में आए, कहते ही गये। आगे से हज़रत उनकी हर बात पर कह रहे हैं कि भाई हमसे गलती हो गयी है, तुम हमें माफ़ कर दो। हम इन्शा-अल्लाह तलाफ़ी कर देंगे। तुम्हारे पाँव पकड़ते हैं, माफ़ कर दो। बहरहाल! उन साहिब का इतना सख़्त गुस्से का आलम कि देखने वाले को भी बरदाश्त न हो, आख़िरकार ठण्डे हो गए।

बाद में हज़रत डॉक्टर साहिब फ़रमाने लगे कि इस अल्लाह के बन्दे को कोई ग़लत ख़बर मिल गयी थी, इस वजह से उनको गुस्सा आ गया था। अगर मैं चाहता तो उनको जवाब दे सकता था और बदला ले सकता था लेकिन इस वास्ते मैंने उसको ठण्डा किया कि बहरहाल यह रिश्तेदार है, और रिश्तेदारों के भी हुक़ूक़ होते हैं। तो रिश्तेदारों के साथ क़ता-ताल्लुक़ कर लेना आसान है, लेकिन ताल्लुक़ जोड़कर रखना यह है दर हक़ीक़त तालीम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। और यह है कि बुराई का बदला बुराई से नहीं बल्कि प्यार से, मुहब्बत से, शफ़क़त से और ख़ैरख़्वाही से दो।

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब का वाक़िआ

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम थे। अ़जीब अल्लाह वाले बुज़ुर्ग थे। दारुल उलूम में मोहतमिम के मायने गोया कि सबसे बड़े ओ़हदे पर पदासीन थे। हज़रत ने एक गाय पाल रखी थी। एक बार ऐसा हुआ कि उसको लेकर आ रहे थे कि रास्ते में मदरसे का कोई

काम याद आ गया। उसी तरह मदरसे आए और गाय मदरसे के सहन में पेड़ के साथ बाँधकर दफ़्तर में चले गये।

वहाँ देवबन्द के एक साहिब आए और चीख़ना शुरू कर दिया कि यह गाय किसकी बंधी है? लोगों ने बताया: मोहतमिम साहिब की है। तो कहने लगे अच्छा! मदरसा मोहतमिम का कमेला बन गया। उनकी गाय का बाड़ा बन गया और मोहतमिम साहिब मदरसे को इस तरह खा रहे हैं कि मदरसे के सहन को उन्होंने अपनी गाय का बाड़ा बना लिया है।

शोर सुनकर वहाँ एक मजमा इकट्ठा हो गया। अब सरासर इल्ज़ाम, सरासर नाइन्साफ़ी, हज़रत वहाँ काम कर रहे थे, अन्दर आवाज़ आई तो बाहर निकले कि क्या क़िस्सा है? लोगों ने बताया कि यह साहिब नाराज़ हो रहे हैं कि मोहतमिम साहिब ने यहाँ गाय बाँध दी। कहने लगे कि हाँ! वाक़ई यह मदरसा है अल्लाह का। मुझे गाय यहाँ नहीं बाँधनी चाहिये थी। यह गाय मेरी ज़ाती है और यह सहन मदरसे का है। मुझसे ग़लती हो गयी, मैं अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूँ। इस ग़लती का कफ़्फ़ारा यह है कि मेरा दिल चाह रहा है कि यह गाय आप ही ले जाओ। वह भी अल्लाह का बन्दा ऐसा था कि लेकर चलता बना।

अब आप देखिए कि सरासर नाइन्साफ़ी और ज़ुल्म है। इतने बड़े अल्लाह वाले और इतने बड़े दीन के ख़ादिम के ऊपर एक मामूली आदमी इतनी गर्मी दिखा रहा है। सब लोगों के सामने बजाए इसके कि उसको बदला दिया जाता, गाय भी उसी को दे दी। यह है नबी करीम सल्ल० की सुन्नत पर अ़मल।

आपकी सारी सुन्नतों पर अ़मल ज़रूरी है

दर असल सुन्नत सिर्फ़ यह नहीं है कि आसान-आसान सुन्नतों पर अ़मल कर लिया जाए। बल्कि हर एक सुन्नत पर अ़मल की फ़िक्र करनी चाहिये और इनसान इस सुन्नत के जितना क़रीब होगा, उतना ही समाज का फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) ख़त्म होगी। ग़ौर करके देख लो और तजुर्बा करके देख लो कि जो बिगाड़ फैला हुआ है वह जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों से दूर होने का नतीजा है।

लेकिन वह माफ़ फ़रमा देते हैं और दरगुज़र से काम लेते हैं। कोई कुछ भी कह दे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जवाब नहीं देते। और जो अल्लाह के वली होते हैं वे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पैरोकार होते हैं और उनका तरीक़ा भी यही होता है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से उसका कुछ हिस्सा हमको भी अ़ता फ़रमा दे।

यह सब कुछ इसलिए अ़र्ज़ किया जाता है कि हम सब एक ही कश्ती के सवार हैं। मालूम नहीं हम कहाँ चले गये हैं। किस वादी में भटक रहे हैं। यहाँ बैठने का मक़सद यह होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों का कम-से-कम थोड़ी देर ध्यान हो तो शायद दिलों में कुछ जज़्बा पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दें। इसकी आ़दत डालो, इसके लिए ख़ून के घूँट पीने पड़ते हैं, इसके लिए मश्क़ करनी पड़ती है, दिल पर जबर करना पड़ता है। दिल पर पत्थर रखने पड़ते हैं। अगर नबी करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की मन्ज़िल की तरफ़ जाना है तो ये कड़वे घूँट पीने पड़ेंगे।

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसन्दीदा घूँट

हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कोई घूँट जो इनसान पीता है अल्लाह तआ़ला को इतना पसन्द नहीं जितना कि गुस्से का पीना।

(मुस्नद अहमद, जिल्द 1 पेज 367)

यानी जब गुस्सा आ रहा हो और गुस्से में आदमी आपे से बाहर हो रहा हो और उसमें अन्देशा हो कि वह किसी को नुक़सान पहुँचा देगा, उस वक़्त गुस्से के घूँट को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी के लिए पी जाना और उसके तक़ाज़े पर अ़मल न करना, यह अल्लाह तआ़ला को बहुत ही पसन्द है।

कुरआन करीम ने सूरः आलि इमरान की आयत 134 के अन्दर ऐसे ही लोगों की तारीफ़ फ़रमाई है कि जब भी गुस्सा आए और बदले के जज़्बात पैदा हों, तो ठीक है तुम्हें शरीअ़त ने जायज़ सीमाओं में बदला लेने का हक़ दिया है। लेकिन यह देखो कि बदला लेने से तुम्हें क्या फ़ायदा? माना एक शख़्स ने तुम्हें तमाँचा मार दिया तो अगर तुम बदला लेने के लिए एक तमाँचा उसके मारो तो तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल हुआ? अगर तुमने उसको माफ़ कर दिया और यह कहा कि मैं अल्लाह तआ़ला के लिए उसको माफ़ करता हूँ तो इसका नतीजा क्या होगा?

अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब्र करने वालों का अज्र

इसका नतीजा यह होगा कि:

तर्जुमाः बेशक सब्र करने वालों को अल्लाह तआ़ला बेहिसाब अज्र अ़ता फ़रमाएँगे। (सूरः जुमर आयत 10)

और हदीस पाक में आता है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के बन्दों को माफ़ करने का आ़दी हो, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब उसने मेरे बन्दों को माफ़ किया था तो मैं उसको माफ़ करने का ज़्यादा हक़दार हूँ। तो उसकी ख़ताएँ भी अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा देते हैं।

माफ़ करने और सब्र का मिसाली वाक़िआ़

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में दो आदमी आपस में लड़े। लड़ाई में एक का दाँत टूट गया। जिसका दाँत टूटा वह शख़्स उसको पकड़कर हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास ले गया और कहा कि दाँत का बदला दाँत से होता है इसलिए क़िसास (बदला) दिलवाइये।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ठीक है, तुम्हें हक़ है लेकिन क्या फ़ायदा, तुम्हारा दाँत तो टूट ही गया, इसका भी तोड़ें, इसके बजाए तुम दाँत की दियत (मुआ़वज़ा) ले लो। दियत पर सुलह कर लो। वह शख़्स कहने लगा कि मैं दाँत ही तोडूँगा। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दोबारा उसको समझाने की कोशिश की लेकिन वह न माना। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि फिर चलो, उसका भी दाँत तोड़ते हैं।

रास्ते में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बैठे हुए थे। बड़े दर्जे के मशहूर सहाबी हैं। उन्होंने कहा कि भाई देखो! तुम बदला

तो ले रहे हो मगर एक बात तो सुनते जाओ, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अगर कोई शख़्स किसी दूसरे को तकलीफ़ पहुँचाए और फिर जिसको तकलीफ़ पहुँची है वह उसको माफ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला उसको उस समय माफ़ फ़रमाएँगे जबकि उसको माफ़ी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, यानी आख़िरत में।

तो यह शख़्स या तो इतने गुस्से में आया था कि पैसे लेने पर भी राज़ी नहीं था, जब यह बात सुनी तो कहा कि क्या आपने यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनी है? हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया हाँ! मैंने सुनी है और मेरे कानों ने सुनी है। वह शख़्स कहने लगा कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात फ़रमाई है तो जाओ उसको बग़ैर किसी पैसे के माफ़ करता हूँ। चुनाँचे उसको माफ़ कर दिया।

हम में और सहाबा किराम में फ़र्क़

हदीसें हम भी सुनते हैं और वे हज़रात भी सुनते हैं, लेकिन उनका हाल यह था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक इरशाद कान में पड़ा तो बड़े-से-बड़ा क़स्द व इरादा और बड़े-से-बड़ा मन्सूबा उस इरशाद के आगे एक पल में ढेर कर दिया।

हम सुबह से शाम तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात पढ़ते और सुनते रहते हैं लेकिन उन पर अ़मल का जज़्बा पैदा नहीं होता। यही वजह है कि इस पढ़ने और सुनने के

नतीजे में हमारी ज़िन्दगी में कोई इन्क़िलाब और बदलाव नहीं आता, लेकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में इ़ज़्ज़त दी थी और आख़िरत में भी इन्शा-अल्लाह उनका बहुत बड़ा मुक़ाम होगा।

ज़िक्र हुई हदीस का आख़िरी टुकड़ा

इसमें दूसरी बात आगे यह फ़रमाई कि अल्लाह तआ़ला हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उस वक़्त तक अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर लें। टेढ़ी क़ौम से मतलब बुतों को पूजने वाली अ़रब क़ौम है। उनके अन्दर शिर्क तो था ही, और दिमाग़ में यह ख़न्नास भी था कि हम सारी मख़्लूक़ से बरतर (बेहतर और ऊँचे रुतबे वाले) हैं। अपने आपको ख़ुदा जाने क्या कुछ समझते थे। उनको सीधा करने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा।

चुनाँचे तैईस साल की मुद्दत में अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये अ़रब के पूरे इलाक़े पर ला इला-ह इल्लल्लाहु की हुकूमत क़ायम फ़रमा दी और आगे फ़रमाया किः

"इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखों को खोलेगा और उनके दिलों के पर्दों को हटाएगा।"

ये सब अलफ़ाज़ तौरात के हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तों के बारे में आए हैं। अल्लाह हमें इन अख़्लाक़ को अपने अन्दर पैदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ